रूस तथा मिन्स्क-II युद्ध विराम

डॉ. इन्द्राणी तालुकदार*

यूक्रेन संकट की हलचल, जो नवम्बर, 2013 में प्रारंभ हुई थी, अभी जारी है और इसके परिणामस्वरूप किसी शान्तिपूर्ण समाधान तक पहुंचने के संकल्प में गतिरोध पैदा हो रहा है, जिससे स्थिति खतरनाक होती जा रही है। इस संकट में शामिल बड़े देशों, नामत: जर्मनी, फ्रांस और यूक्रेन के साथ-साथ रूस द्वारा एक युद्धविराम के रूप में हाल में किया गया प्रयास, जिसे मिन्स्क-II का नाम दिया गया, अमान्य होने की कगार पर है, क्योंकि कीव सरकार और रूसी समर्थक अलगाववादियों के बीच संघर्ष जारी है। यह नया युद्धविराम उस पूर्व युद्धविराम की अनुवर्ती (कार्रवाई) है, जिस पर पिछले वर्ष सितम्बर में हस्ताक्षर किया गया था।

यूक्रेन के राष्ट्रपति पीटर पोरेशेन्को ने रूस पर पूर्वी यूक्रेन में रूस समर्थक अलगाववादियों को समर्थन देकर यूक्रेन[1] के विरूद्ध 'सीधा तथा खुलेआम आक्रमण' करने का आरोप लगाया। उन्होंने क्रेमलीन पर रूसी विपक्षी दल के नेता बोरिस नेम्तसोव की हत्या में उनकी भागीदारी का आरोप लगाया। पोरेशेन्को के अनुसार, मारे गए नेता नेम्तसोव एक ऐसी रिपोर्ट के निष्कर्षों का खुलासा करने वाले थे, जिसमें यूक्रेन में अलगाववादी विद्रोह में रूस की प्रत्यक्ष भागीदारी का साक्ष्य प्रस्तुत किया गया था, जिसे मॉस्को नकारता रहा है।[2]

रूस और अमरीका के बीच विवाद

यूक्रेन के संकट ने पहले ही विश्व को तीन खेमों - रूस, अमरीका और तटस्थ खेमा - में बांटते हुए दो परम्परागत प्रतिद्वन्दी रूस और अमरीका के बीच शीतयुद्ध की वापसी का खतरा पैदा कर दिया है। रूस और अमरीका के बीच शत्रुता का पैमाना एक ऊंचे स्तर तक पहुँच गया है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण द्विपक्षीय वार्ताओं में गतिरोध आ गई है, जैसेकि मास्को के भण्डारित हथियार-ग्रेड यूरेनियम और प्लूटोनियम

के चोरी होने अथवा काले बाज़ार[3] में बेचे जाने से सुरक्षा देने संबंधी सहायता से अमरीका का इनकार करना और अमरीका का आरोप लगाना कि रूस ने जमीन से छोड़े जाने वाले क्रूज मिसाईल का परीक्षण करके पिछले वर्ष मध्यम-दूरी परमाणु बल संधि का उल्लंघन किया था।[4] इसने रूस को संभाव्य सैन्य अनुप्रयोगों वाली असैनिक प्रौद्योगिकी के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है; असैनिक परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं पर रूस के साथ सहयोग स्थगित कर दिया है; नासा का इसके रूसी समकक्ष से संपर्क तोड़ दिया है; और अमरीकी ऊर्जा विभाग के प्रयोगशालाओं में रूसी विशेषज्ञों को प्रवेश से भी वंचित कर दिया है।[5]

रूस के विरूद्ध इन उपायों ने अमरीका के विरूद्ध इसके रूख को कड़ा कर दिया। यह (रूस) नहीं चाहता कि ओबामा प्रशासन यूक्रेन संकट के समाधान के संबंध में होने वाली किसी भी वार्ता का हिस्सा बने। अमरीका सहित पश्चिम की ओर से यूरोपीय संघ किसी शान्तिपूर्ण समाधान के लिए वार्ताएं कर रहा है, लेकिन इसमें कोई सफलता नहीं मिली है। पिछले वर्ष, युद्धविराम, जिस पर संघर्षरत पक्षों (कीव सरकार, रूस समर्थित विद्रोही और यूरोपीय संघ) के बीच सहमति हुई थी, का उल्लंघन हुआ, जिसके कारण युद्धरत दोनों पक्षों के लोग बड़ी संख्या में मारे गए और रूस पर कड़े प्रतिबंध लगा दिये गए।

मिन्स्क-।। के लिए उत्तरदायी चुनौतियां

संघर्ष के लंबे समय तक जारी रहने के दुष्परिणाम यूक्रेन तथा रूस के साथ-साथ यूरोप की अर्थव्यवस्था पर प्रदर्शित हुए हैं और इसके परिणामस्वरूप, इस संकट का कोई हल तलाशने के लिए कीव सरकार, रूस, जर्मनी और फ्रांस के बीच 'सारी रात' वार्ता हुई। मिन्स्क-॥ युद्धविराम, जो 15 फरवरी, 2015 से लागू हुआ, पिछले वर्ष सितंबर के मिन्स्क-। शांति करार, जो विफल हो गया था[6], पर आधारित है। इस युद्धविराम में जिन बिन्दुओं पर पक्षकारों के बीच सहमति हुई थी, वे थेः

- तत्काल तथा पूर्ण द्विपक्षीय युद्धविराम;
- दोनों पक्षों द्वारा सभी घातक हथियारों को हटाना;
- युद्धविराम तथा घातक हथियारों की वापसी के लिए प्रभावी अनुवीक्षण तथा सत्यापन व्यवस्था करना जिसका अनुवीक्षण यूरोपीय सुरक्षा व सहयोग संगठन (ओएससीई) द्वारा किया जाएगा;
- वापसी के पहले दिन से ही दोनेस्क तथा लुहान्स्क के स्व-घोषित स्वतंत्र क्षेत्रों में स्थानीय चुनाव कराने पर वार्ता शुरू करना;
- दोनेस्क तथा लुहान्स्क संघर्ष में शामिल हस्तियों पर किसी भी मुकदमे पर प्रतिबंध लगाकर क्षमा तथा आम माफी देना;
- सभी युद्धबंदियों तथा अवैध रूप से बंदी बनाए गए लोगों को रिहा करना;

- जरूरतमंदों को अंतर्राष्ट्रीय निगरानी में मानवीय सहायता की अबाध प्रदायगी;
- पूर्वी यूक्रेन में प्रभावित क्षेत्रों के साथ सामाजिक तथा आर्थिक संपर्कों की पूर्णरूपेण बहाली; यूक्रेन संघर्ष से प्रभावित जिलों में अपनी बैंकिंग सेवाओं को पुनः बहाल करेगा;
- संघर्ष प्रभावित सम्पूर्ण क्षेत्रों में राष्ट्रीय सीमा पर यूक्रेन सरकार का पूर्ण नियंत्रण पुनः बहाल किया जाएगा। स्थानीय चुनावों के बाद इसे पहले दिन से प्रारंभ किया जाए और वर्ष 2015 के अंत तक व्यापक राजनीतिक समाधान के बाद पूरा किया जाए। (विद्रोहियों के नियंत्रण वाले दोनेस्क तथा लुहान्स्क क्षेत्रों में स्थानीय चुनाव यूक्रेन के कानून तथा एक संवैधानिक सुधार पर आधारित होंगे)।
- यूक्रेनी क्षेत्र से सभी विदेशी सशस्त्र समूहों, हथियारों तथा भाड़े के सैनिकों की वापसी, जिसका पर्यवेक्षण यूरोपीय सुरक्षा व सहयोग संगठन (ओएससीई) द्वारा किया जाए। सभी अवैध समूहों को शस्त्रविहीन करना;
- वर्ष 2015 के अंत तक एक नया संविधान अंगीकार करके यूक्रेन में संवैधानिक सुधार करना। इसका एक मुख्य तत्व विकेन्द्रीकरण (दोनेस्क तथा लुहान्स्क क्षेत्रों के कतिपय हिस्सों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए तथा इन क्षेत्रों के प्रतिनिधियों की सहमति से) तथा इन क्षेत्रों की विशेष स्थितियों पर स्थायी कानून को अंगीकार करना।[7]

नए युद्धविराम में अलगाववादियों के लिए आम माफी तथा कीव के युद्धग्रस्त पूर्वी क्षेत्रों को सत्ता के हस्तांतरण सहित पूर्वी यूक्रेन में एक स्थायी समाधान के लिए एक रोडमैप/खाका तैयार किया जाना था।

युद्धविराम के बावजूद चुनौतियां

इसके कार्यान्वयन के दौरान, यूक्रेन को विद्रोहियों की ओर से (किए गए) जनहानि का सामना करना पड़ा, जिसके कारण भयंकर लड़ाई शुरू हो गई, जिसने युद्धविराम की शर्तों का उल्लंघन कर दिया। अलगाववादियों की मांगों में से एक मांग कीव सरकार और पश्चिम से यह गारंटी लेना है कि यूक्रेन नाटो का सदस्य नहीं बनेगा।[8] विद्रोहियों की यह मांग रूस की भावनाओं को दर्शाता है, जिसे इस प्रकार के किसी चाल की आशंका बनी हुई है।

कीव टुकड़ियों तथा विद्रोहियों के बीच युद्धस्थल का विस्तार एक रेलवे केन्द्र, देबाल्टसेव तक हो गया था, जो दोनेस्क तथा लुहान्स्क और मारिउपोल को जोड़ता है,[9] जो यूक्रेन और रूस दोनों के लिए एक सामरिक पत्तन शहर है। युद्ध विराम से पहले देबाल्टसेव में युद्ध जारी था, जिसे अलगाववादियों द्वारा अपने क्षेत्रों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।[10] अलगाववादियों ने इस क्षेत्र में युद्धविराम करने से इंकार कर दिया था।[11] उनके द्वारा यह तर्क दिया गया कि देबाल्टसेव युद्धविराम अनुच्छेद के तहत नहीं

आता। कई दिनों की गंभीर लड़ाई के बाद इस शहर पर विद्रोहियों द्वारा कब्जा कर लिया गया था।[12] देबाल्टसेव के बाद युद्ध मारिउपोल की ओर मुड़ गया है और यूक्रेनी प्राधिकारियों को डर है कि रूसी मुख्य भूमि और क्रीमिया के बीच एक गलियारा स्थापित करने के प्रयासों में विद्रोही कहीं इस पत्तन शहर पर कब्जा न कर लें।[13] मारिउपोल पूर्वी यूक्रेन के इस्पात तथा अनाज निर्यात के लिये और रूसी सीमा से क्रीमिया के समुद्र तटीय मार्ग के विस्तार के लिये महत्वपूर्ण है।[14] इस पत्तन शहर पर कब्जा कर लेने से एक अधिक निरूपित इनक्लेव बन जाएगा और यदि अलगाववादी भविष्य में इस क्षेत्र को किसी स्वायत्त राष्ट्र के रूप में संगठित करने में सफल रहते हैं, तो इस पत्तन शहर में प्रवेश आर्थिक लाभ[15] प्रदान करेगा, जो रूस के लिए भी महत्वपूर्ण होगा।

पश्चिम तथा अमरीका के साथ कीव सरकार ने रूस पर विद्रोहियों को शस्त्र तथा टुकड़ियों से सहायता देने और यूक्रेन में 'विदेशी निशानची समूहों'[16] को भेजने का भी आरोप लगाया है। रूस इस बात पर कायम है कि जो टुकड़ियां विद्रोहियों के साथ (मिलकर) लड़ रही हैं, वे रूसी स्वयंसेवक हैं और उन्हें क्रैमलीन सरकार द्वारा निर्देश नहीं दिये गए हैं। सैन्य उपकरणों के बारे में क्रैमलीन का मानना है कि युद्ध प्रणालियां पुराने सोवियत अड्डों से और यूक्रेनी सैनिकों के युद्ध क्षेत्र से हटने[17] के बाद उनसे जब्त करके हासिल की गई हैं। नवम्बर 2014 में एसबीयू (सीआईए का यूक्रेनी स्वरूप) के प्रमुख सलाहकार माकिग्यान लुब्त्सेवकी ने वक्तव्य दिया था कि रूसी टुकड़ियां युद्ध में शामिल नहीं हैं और वे यूक्रेन में भी उपस्थित नहीं हैं।[18]

रूस का तर्क, असुरक्षा तथा वार्ताएं

रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने स्वीकार किया है कि उन्होंने मार्च 2014 के जनमतसंग्रह से कुछ सप्ताह पहले क्रीमिया पर नियंत्रण करने का आदेश अपने अधिकारियों को दिया था, जिसके कारण यूक्रेन से इस क्षेत्र का विलय कर लेने की प्रेरणा मिली। यह वक्तव्य रूसी अधिकारियों के उन पूर्व दावों के विपरीत है कि विलय का निर्णय जनमत संग्रह के बाद ही लिया गया था, जब क्रीमिया की जनता ने रूसी संघ का हिस्सा बनने के पक्ष में मतदान किया।[19] पुतीन के अनुसार, इस कार्रवाई के पीछे उद्देश्य इस प्रायद्वीप में जातीय रूसियों की रक्षा करना और उस अन्याय का सुधार करना था, जिसके अंतर्गत सोवियत नेता निकिता क्रुशचेव ने वर्ष 1954 में क्रीमिया, जो उस समय सोवियत गणराज्य में था, को रूस से हस्तांतरित करके यूक्रेन को उपहार स्वरूप दे दिया था।[20] उन्होंने मार्च में रूस में यूक्रेन के क्रीमिया क्षेत्र के विलय का बचाव यह कहते हुए किया कि रूस इस 'पवित्र प्रायद्वीप'[21] को कभी नहीं छोड़ेगा। पुतिन के इस रहस्योद्घाटन ने यूक्रेन के संकट को डावांडोल स्थिति में छोड़ दिया क्योंकि यूक्रेन तथा रूस के राष्ट्रीय हित बड़े दांव पर लगे हैं। इस राज्यान्तर्गत संघर्ष में पश्चिम के शामिल होने के साथ ही रूस तथा उनके बीच तनाव बढ़ गया है। यूक्रेन में शान्ति बहाली का इच्छित परिणाम प्राप्त करने में मिलने वाली सफलता के दायरे पर प्रश्न चिन्ह है।

रूस का मानना है कि पूर्व-सोवियत गणराज्य इसके प्रभाव क्षेत्र में हैं[22] और घरेलू मामलों में किसी भी प्रकार की विदेशी दखल अस्वीकार्य है।[23] क्रेमलीन मानता है कि पश्चिम, विशेषकर अमरीका, इन देशों के माध्यम से रूस की शक्ति को घेर कर सीमित करना चाहता है। इसने अमरीका पर मास्को के पड़ोसी देशों में रंगीन क्रान्ति उकसाने और उन देशों में व्यवस्था परिवर्तन हेतु विपक्षी दलों का समर्थन करने का भी आरोप लगाया है। दिसम्बर 2014 में, स्टेट ऑफ द यूनियन के अपने वार्षिक भाषण में पुतिन ने पश्चिम पर यूक्रेन में संकट बढ़ाने और प्रतिबंधों का प्रयोग करके रूस पर दबाव बनाने का प्रयास करने का आरोप लगाया। उन्होंने अमरीका और यूरोप पर आरोप लगाया कि वे रूस को कमजोर करने के उद्देश्य से लंबे समय से आयोजित रणनीति को आगे बढ़ाने के लिए यूक्रेन संकट का रूखेपन से उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि "सीमित करने की नीति..... अनेक वर्षो से.... (रूस) के विरूद्ध चलाई गई..... जब भी कोई समझता है कि रूस बहुत सुदृढ़ अथवा स्वतंत्र हो गया है, तो इन उपायों का उपयोग तुरंत शुरू कर दिया जाता है।"[24] हालांकि रूस पर लगाए गए कड़े प्रतिबंधों तथा तेल के गिरते मूल्यों के साथ ही देश की अर्थव्यवस्था का भविष्य कुछ समय से उत्साहजनक नहीं रहा है। पुतिन ने अपने और अपने मंत्रियों के वेतन में 10 प्रतिशत की कटौती की है, क्योंकि देश अभी भी आर्थिक तंगी का सामना कर रहा है।[25]

इस संकट में शामिल बाहरी देशों में से सबसे ज्यादा प्रभावित रूस ने एक प्रस्ताव का प्रारूप परिचालित किया है, जिसमें युद्धविराम के नए करार का समर्थन किया गया है और सभी पक्षों से इसका पूरी तरह से पालन करने का आह्वान किया गया है।[27] इस कदम ने यूक्रेन के संकट में रूस की 'अनुमानित' भूमिका को देखते हुए पश्चिम को आश्चर्य में डाल दिया था।

यह प्रस्ताव मिन्स्क समझौते पर सहमति होने के एक दिन बाद 13 फरवरी को रूस द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में प्रस्तुत किया गया था। इस प्रारूप का उद्देश्य मिन्स्क करार का समर्थन तथा कार्यान्वयन करना था। इसमें पूर्वी यूक्रेन में जारी हिंसा पर चिन्ता व्यक्त की गई है और संघर्ष के शान्तिपूर्ण समाधान के महत्व पर जोर दिया गया है। इस प्रस्ताव में 'सम्पूर्ण युद्ध विराम' तथा एक 'राजनीतिक समाधान' का आह्वान किया गया है जो यूक्रेन की सम्प्रभुता, स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखण्डता का सम्मान करे। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रूसी प्रवक्ता ने यूक्रेनी पक्ष से आग्रह किया कि वह इस संघर्ष में हस्तक्षेप करने के लिए मास्को पर आरोप लगाने की बजाय स्व-घोषित स्वतंत्र राष्ट्रों दोनेस्क तथा लुहान्सक के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता में भाग ले।[28]

इस युद्ध विराम को उन दो क्षेत्रों दोनेस्क और लुहान्स्क में कायम रखा गया है, जिसका उल्लेख दस्तावेज में किया गया था। संघर्ष वाली सीमाओं से घातक हथियारों को हटाया गया है और युद्धरत दोनों पक्षों ने युद्धविराम के अनुच्छेदों के अनुसार दर्जनों युद्धबंदियों का आदान-प्रदान किया है। पोरेशेन्को के

अनुसार, "रूस समर्थक विद्रोहियों ने संघर्ष विराम अनुच्छेद के अनुसार घातक हथियार 'बड़ी' मात्रा में वापस हटा लिए गए हैं।"

कारण जिनसे गतिरोध पैदा हो सकता है

तथापि, अमरीका द्वारा अलगाववादियों पर थोपे गए नवीनतम प्रतिबंधों और यूक्रेन की सरकार को 'नए नॉन-लीथल रक्षात्मक सुरक्षा सहायता' में 75 मिलियन डॉलर भेजने से भी स्थिति का समाधान नहीं निकला। पिछले महीने युनाइटेड किंगडम ने यूक्रेन की सेना को प्रशिक्षित करने के लिए यूक्रेन में सैन्यकार्मिकों को भेजने का निर्णय लिया था।[31]

अमरीका और युनाइटेड किंग्डम की ये चालें स्थिति को और गंभीर बनाएगी, क्योंकि नाटो के विस्तार के माध्यम से इसके 'नजदीकी विदेश' में पश्चिम के हस्तक्षेप और पूर्व-सोवियत देशों के साथ यूरोपीय संघ के व्यापार करारों से रूस खतरा महसूस कर रहा है। कुछ पूर्व शीर्ष अमरीकी पदाधिकारियों द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि यूक्रेन में रूस की *तथाकथित*[32] विजय पुतिन को जातीय रूसियों और रूसी बोलने वालों की रक्षा करने के अपने सिद्धान्त का पालन करने के लिए बाल्टिक राष्ट्रों सहित पड़ोस में कहीं और क्षेत्रीय परिवर्तन करने के लिए लुभा सकता है, जो नाटो के लिए एक सीधी चुनौती होगी।[33] इस बीच, नाटो अक्टूबर और नवंबर[34] में बाल्टिक राष्ट्रों में सबसे बड़े सैन्य अभ्यास की योजना बना रहा है, जो रूस के भीतर की असुरक्षा (की भावना) को गंभीर बना सकता है, जिससे इस संघर्ष में उत्तेजना और गतिरोध पैदा हो सकता है।

निष्कर्ष

यूक्रेन के संकट ने रूस और पश्चिम, विशेषकर शीतयुद्ध पश्चात के अमरीका के बीच व्याप्त अविश्वास को प्रदर्शित किया है। रूस अपने पड़ोस में पश्चिम के विस्तार से असुरक्षित महसूस करता है, क्योंकि मास्को इसे अपने प्रभाव और राष्ट्रीय हितों पर सीधे खतरे के रूप में देखता है। यह चाहता है कि वैश्विक व्यवस्था बहुध्रुवीय हो, जहां इसे पश्चिम द्वारा समकक्ष भागीदार के रूप में देखा जाए, पर ऐसा अब तक नहीं हुआ है। यूक्रेन संकट को किसी सर्वनाशक घटना बनने के खतरे को कम करने के लिए (जैसाकि राष्ट्रपति पुतिन ने हाल ही में टिप्पणी की थी) रूस और पश्चिम के बीच तत्काल विश्वास सृजक उपाय, जो अंतत: विश्वास और सम्मान पैदा करे, लागू किये जाने की जरूरत है। इसमें शामिल सभी पक्षों (कीव सरकार, अलगाववादी, रूस और पश्चिम) को आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति बंद करने तथा युद्धविराम के सफल कार्यान्वयन के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है।

**डॉ. इंद्राणी तालुकदार विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।*

समाप्ति नोट:

---

[1] "यूक्रेन के पोरोशेन्को ने रूस पर 'खुले आक्रमण' का आरोप लगाया", *वॉयस ऑफ अमेरिका* 1 सितंबर, 2014. http://www.voanews.com/content/lavrov-urges-ukraine-cease-fire-as-parties-hold-talks/2434403.html (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[2] "बोरिस नेम्तसोव की हत्या की जांच उस समूह द्वारा की गई, जो पुतिन के प्रति उत्तरदायी है" *सीबीसी समाचार* 28 फरवरी 2015. http://www.cbc.ca/news/world/boris-nemtsov-s-murder-investigated-by-group-that-answers-to-putin-1.2977001 (1 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[3] ब्रायन बेन्डर, "रूस ने अमरीकी परमाणु सुरक्षा गठबंधन समाप्त किया", *द बोस्टन ग्लोब* 19 जनवरी, 2015. http://www.bostonglobe.com/news/nation/2015/01/19/after-two-decades-russia-nuclear-security-cooperation-becomes-casualty-deteriorating-relations/5nh8NbtjitUE8UqVWFIooL/story.html (19 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[4] "अमरीका का कहना है, रूस ने '1987 परमाणु मिसाइल संधि का उल्लंघन किया'," *बीबीसी समाचार*, 29 जुलाई, 2014. http://www.bbc.com/news/world-us-canada-28538387 (19 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[5] रॉबर्ट लेगवोल्ड, "नए शीत युद्ध का प्रबंधन", *विदेश मामले*, (जुलाई/अगस्त अंक, 2014)। http://www.foreignaffairs.com/articles/141537/robert-legvold/managing-the-new-cold-war (15 दिसंबर, 2014 को एक्सेस किया गया)।

[6] रोलाण्ड ओलिफों, "यूक्रेन संकट: मिन्स्क समझौते ने 'आशा की किरण' दिखलाई है कि (संघर्ष का) अंत दृष्टिगोचर हो सकता है", द टेलीग्राफ 12 फरवरी, 2015. http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/europe/ukraine /11409624/Ukraine-crisis-Minsk-deal- brings-glimmer-of-hope-that-end-could-be-in-sight.html (17 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[7] "यूक्रेन युद्ध विराम: नए मिन्स्क समझौते के मुख्य बिन्दु", बीबीसी, 12 फरवरी, 2015. http://www.bbc.com/news/world-europe-31436513 (18 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[8] 'छद्म-शांति", *द इकोनॉमिस्ट*, 16 फरवरी, 2015. http://www.economist.com/news/europe/21643511-pro-russian- rebels-are-still-fighting-key-town-and-ukrainians-are-waiting-ceasefire (18 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[9] इसके पास महत्वपूर्ण धातुकर्म संयंत्र मौजूद हैं। एलेक लुहन, "खार्किव ब्लास्ट ने यूक्रेन संघर्ष विराम को हिलाकर रख दिया" , *द गार्जियन*, 22 फरवरी, 2015. http://www.theguardian.com/world/2015/feb/22/ukraine-and-pro-russia-rebels-swap-dozens-of- prisoners (23 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[10] "नाजुक यूक्रेन युद्ध विराम नियंत्रण में है", *ताइपे टाइम्स*, 16 फरवरी 2015. http://www.taipeitimes। com/News/front/archives/2015/02/16/2003611678 (18 फरवरी 2014 को एक्सेस किया गया)।

[11] 'छद्म-शांति", पूर्व उद्धृत

[12] मार्क पिग्गोट "यूक्रेन: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने नए युद्ध विराम के लिए रूसी संकल्प को मंजूरी दी", *इंटरनेशनल बिजनेस टाइम*, 17 फरवरी, 2015. http://www.ibtimes.co.uk/ukraine-un-security-council-approves-russian-resolution- new-ceasefire-1488407 (20 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[13] यूक्रेन का कहना है, युद्ध विराम की संभावना के बावजूद विद्रोही आक्रमण जारी", *डीडब्ल्यू*, 14 फरवरी, 2015. http://www.dw.de/ukraine- says-rebel-offensive-continues-as-ceasefire-looms/a-18257996 (20 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[14] अलेस्संद्रा प्रेन्तिस और पावेल पॉलित्यूक, "रूसी-समर्थक बागियों ने मुख्य पत्तन पर हमले बोले; यूक्रेन का कहना है, कम से कम 30 मरे", *रायटर*, 24 फ़रवरी, 2015. http://www.reuters.com/article/2015/01/24/us-ukraine-crisis- casualties- idUSKBN0KX 08B20150124 (24 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[15] ब्राड हावर्ड, 'विद्रोही मरिउपोल क्यों चाहते हैं", *Medium.com*। https://medium.com/@bradhoward/why-the-rebels- want-mariupol-5cd59bb8a422 (24 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[16] व्लादिमीर सोल्डटकिन, "यूक्रेन से भागने के एक वर्ष बाद (अब) यनुकोवीच वापसी की बात करते हैं", *रायटर*, 21 फ़रवरी, 2015. http://www.reuters.com/article/2015/02/21/us-ukraine-crisis-yanukovich-russia-idUSKBN0LP0FD20150221 (23 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

17 "यूक्रेन के विद्रोहियों को हथियार कहां से मिल रहे हैं? पुराने सोवियत अड्डों/ठिकानों से, रूस के शीर्ष नेतागण कहते हैं, "*आर टी*, 31 अगस्त, 2014. http://rt.com/news/183968-defense-deputy-antonov-slovakia/ (24 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[18] जॉर्ज एलियसन, "यूक्रेनी सैन्य हाई कमान पुष्टि करता है: "कोई रूसी आक्रमण या नियमित सैन्य टुकड़ी नहीं". डॉनबास में नाटो सेना की उपस्थिति", *ग्लोबल रिसर्च*, 15 फरवरी, 2015. http://www.globalresearch.ca/ukraine-military-high-command-confirms-no-russian-invasion-or-regular-troops-presence-of-nato-forces-in-donbass/5431369 (25 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[19] "पुतिन कहते हैं, जनमत संग्रह से पहले रची क्रीमिया हथियाने की योजना", *द मास्को टाइम्स*, 9 मार्च, 2015. http://www.themoscowtimes.com/news/article/putin-says-plan-to-take-crimea-hatched-before-referendum/517169.html (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[20] आंद्रे द नेस्नेरा, *"किसने पुतिन को क्रीमिया के विलय के लिए प्रेरित किया/उकसाया? "वॉयस ऑफ अमेरिका*, 26 मार्च, 2014. http://www.voanews.com/content/what-prompted-putins-annexation-of-crimea/1879884.html (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[21] जेम्स मार्सन और एंड्री ओस्ट्रॉख, "रूस के पुतिन ने पश्चिम पर यूक्रेन संकट भड़काने का आरोप लगाया", *द वॉल स्ट्रीट पत्रिका*, 8 दिसंबर, 2014. http://www.wsj.com/articles/russias-putin-accuses-west-of-provoking-ukraine-crisis- 1417689749 (10 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[22] रूस द्वारा यूरेशियाई सीमा शुल्क संघ की स्थापना अपने पड़ोस में अपना प्रभाव बनाए रखने का एक तरीका है।

[23] सुसान बी. ग्लासर, "मंत्री नहीं: सर्गेई लावरोव और रूसी सत्ता का दो-टूक तर्क", *विदेश नीति*, 29 अप्रैल, 2013. http://foreignpolicy.com/2-13/04/29/minister-no/ (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[24] मार्सन और ओस्ट्रॉख, "रूस के पुतिन का पश्चिम पर आरोप", पूर्व उद्धृत

[25] "रूस के पुतिन ने अपने वेतन में 10 प्रतिशत की कटौती की", *अल अरबिया*, 7 मार्च, 2015. http://english.alarabiya.net/en/variety/2015/03/07/Putin-slashes-10-pct-of-own-salary-PM-s-and-MPs-.html (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[26] अपने प्रतिबंधों के कारण और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पश्चिमी देशों द्वारा कुछेक प्रकार के अलगाव का सामना करने के कारण भी।

"यूक्रेन का कहना है, युद्ध विराम की संभावना के बावजूद विद्रोही आक्रमण जारी", *डीडब्ल्यू*, 14 फरवरी, 2015.

[27] http://www.dw.de/ukraine- says-rebel-offensive-continues-as-ceasefire-looms/a-18257996 (17 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[28] "यूक्रेन पर रूसी संकल्प का प्रारूप संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा पारित", *आर टी*, 18 फरवरी, 2015. http://rt.com/news/233243-un-council-resolution-ukraine/ (20 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[29] "यूक्रेन संकट: पोरोशेन्को की पुष्टि, विद्रोही हथियार ले जाया गया है", *बीबीसी*, 10 मार्च, 2015. http://www.bbc.com/news/world-europe-31806946 (11 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[30] डेविड जैक्सन और ग्रेगरी कोर्ते, "डब्ल्यू.एच.: रूसी अलगाववादियों पर नए प्रतिबंधों, यूक्रेन को गैर-घातक सहायता", *संयुक्त राज्य अमेरिका टूडे*, 11 मार्च, 2015. http://www.usatoday.com/story/news/nation/2015/03/11/obama-ukraine-russia-biden-petro-poroshenko/70144298/ (12 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[31] "कैमरून: "यूक्रेनी सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए ब्रिटेन सैन्य सलाहकारों को भेजेगा", *कीव पोस्ट*, 25 फरवरी, 2015. https://www.kyivpost.com/content/ukraine/cameron-uk-to-send-military-advisers-to-train-ukrainian-servicemen- 381802.html (25 फ़रवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[32] लेखक जोर देकर कहते हैं।

[33] इवो डाल्दर, मिशेल फ़्लोउर्नय, जॉन हेर्बस्त, जन लोदल, स्टीवन पिफर, जेम्स स्ताव्रिदिस, स्ट्रोब टाल्बोट और चार्ल्स वाल्ड, "यूक्रेन की स्वतंत्रता के संरक्षण रूसी आक्रामकता का विरोध: संयुक्त राज्य अमरीका और नाटो को क्या करना चाहिए", *अटलांटिक परिषद*, फरवरी 2015. http://www.thechicagocouncil.org/sites/default/files/UkraineReport_February2015_FINAL.pdf (25 फरवरी, 2015 को एक्सेस किया गया)

[34] अलस्टेयर मैकडोनाल्ड, "नाटो चीफ कहते हैं, रूस अभी भी यूक्रेनी विद्रोहियों को हथियारबन्द कर रहा है', *रायटर*, 11 मार्च, 2015.

http://www.reuters.com/article/2015/03/11/us-ukraine-crisis-nato-russia-idUSKBN0M70W420150311 (12 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।